वन उत्पादकता संस्थान, रांची
(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून)
पर्यावरण,वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार
INSTITUTE OF FOREST PRODUCTIVITY

आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत वन विज्ञान केंद्र के तहत "लाह उत्पादन एवं उपयोग" विषय पर प्रशिक्षण

दिनांक 27.10.2021

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के शासनादेश एवं वन उत्पादकता संस्थान, रांची के निदेशक के सक्रिय पहल पर आजादी का अमृत महोत्सव के तत्वावधान में नवनिर्मित वन विज्ञान केंद्र, चंदवा (झारखंड) के अंतर्गत दिनांक 27.10.2021 को वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा "लाह उत्पादन एवं उपयोग" विषय पर खुंटी जिला के तोरपा प्रखंड अंतर्गत तुरीगढ़ा ग्राम में संस्थान के विस्तार प्रभाग के श्री एस. एन. वैद्य के नेतृत्व में गठित एक दल द्वारा एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता मरचा पंचायत के मुखिया श्री नीरल टोपनो ने किया जिसमे 37 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के शुरुआत में तुरीगढ़ा ग्राम के ग्राम सभाअध्यक्ष श्री सुरेन्दर बरवा द्वारा संस्थान के अधिकारियो एवं मरचा पंचायत के मुखिया का परिचय तथा स्वागत किया गया।

श्री सुरेंद्र बरवा के संचालन में स्वागतोपरांत दीनदयाल उपाध्याय ग्राम स्वावलंबन योजना के उपदेशक श्री सुनील शर्मा ने कार्यक्रम में उपस्थित किसानों, महिलाओं एवं संस्थान के अधिकारियों का स्वागत करते हुए प्रशिक्षण से अधिकाधिक लाभ ग्रामीणों तक पहुचाने के लिए संस्थान के निदेशक के पहल की सराहना की। अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में मरचा पंचायत के मुखिया श्री नीरल टोपनो ने तुरीगढ़ा को लाह का क्षेत्र बताते हुए इसके उत्पादन में हुए ह्रास पर चिंता जाहीर की एवं आशा व्यक्त की कि इस प्रशिक्षण से पुनः लाह उत्पादन को बल मिलेगा। उन्होंने संस्थान के तकनीक का अनुपालन विशेषकर लाह उत्पादन एवं लाह के उपयोग तथा लाह की खेती द्वारा अतिरिक्त आमदनी के लिए ग्रामीणों को प्रोत्साहित भी किया। उन्होने संस्थान के निदेशक की इस प्रयास की सराहना की एवं प्रशिक्षकों का स्वागत किया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए संस्थान के श्री बी.डी. पंडित ने एवं लाह उत्पादन एवं लाह के उपयोग प्रशिक्षण के महत्व कार्यक्रम की चर्चा करते हुए संस्थान की गतिविधियो से अवगत कराया। आज के परिप्रेक्ष में लाह उत्पादन या लाह की खेती की आवश्यकता एवं आय सृजन में इसके महत्व से अवगत कराया।

प्रशिक्षण की शुरुआत करते हुए संस्थान के मुख्य तकनीकी अधिकारी श्री एस.एन.वैद्य ने तुरीगढा ग्राम के अतिरिकत अन्य ग्रामों के ग्रामीणो,ग्राम प्रतिनिधियों,प्रेरक दीदी तथा गैर सरकारी संगठन के सदस्यों को लाह पोषक वृक्षों की पहचान, प्रबंधन एवं झारखंड में क्षेत्रवार उसकी उपलब्धता को बताया। पलास, बेर, कुसुम को मुख्य पोषक वृक्ष बताते हुए उसपर पलने वाले लाह प्रजातियों का वर्णन किया। फ्लेमेंजिया सेमियालता पौध तैयार करना, उसका रोपण एवं उसपर लाह उत्पादन के तरीकों को विस्तार से बताया। श्री वैद्य ने लाह प्रसंस्करण के तरीकों को बताते हुए इसके उपयोग की भी चर्चा की। इन्होने ग्रामीणों से आग्रह किया की प्रशिक्षण में अपनी जिज्ञासा प्रशिक्षकों के समक्ष अवश्य रखें।

संस्थान के श्री बी.डी. पंडित, तकनीकी अधिकारी ने लाह उत्पादन के विभिन्न प्रक्रियाओं को विस्तार से बताया। कलम करना, संचारण करना, फूंकी उतारना, कीटनाशक दवाई का छिड़काव, फसल कटाई एवं लाह बीज संरक्षण आदि प्रक्रियाओं को विस्तार से समझाया। लाह उत्पादन को कीट पालन से जोड़ते हुए श्री पंडित ने बताया कि कीटों का संरक्षण के लिए पोषक वृक्षों का प्रबंधन एवं उपयुक्त प्रक्रिया अपनाना अति आवश्यक है।

श्री बी.डी. पंडित, त.अ. एवं श्री सूरज कुमार, व.त.स. ने लाह की उपयोगिता के बारे में प्रशिक्षकों को विस्तार से बताया।

प्रश्नोत्तरी के माध्यम से किसानों, जनप्रतिनिधियों से चर्चाए की गई एवं चर्चा में पूछे गए सवालों का श्री एस.एन.वैद्य, श्री बी.डी. पंडित एवं श्री सूरज कुमार ने जवाब देकर किसनों को संतुष्ट किया।

कार्यक्रम की सफलता से खुश मुखिया एवं पंचायत अध्यक्ष ने इसी प्रकार की एक–दो प्रशिक्षण की आवश्यकता पर जोर दिया तथा महिलाओं द्वारा मधु कीट पालन के प्रशिक्षण हेतु आग्रह किया गया।

श्री सुनील शर्मा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा की गई।

आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां

आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां

आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां

आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां

आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां